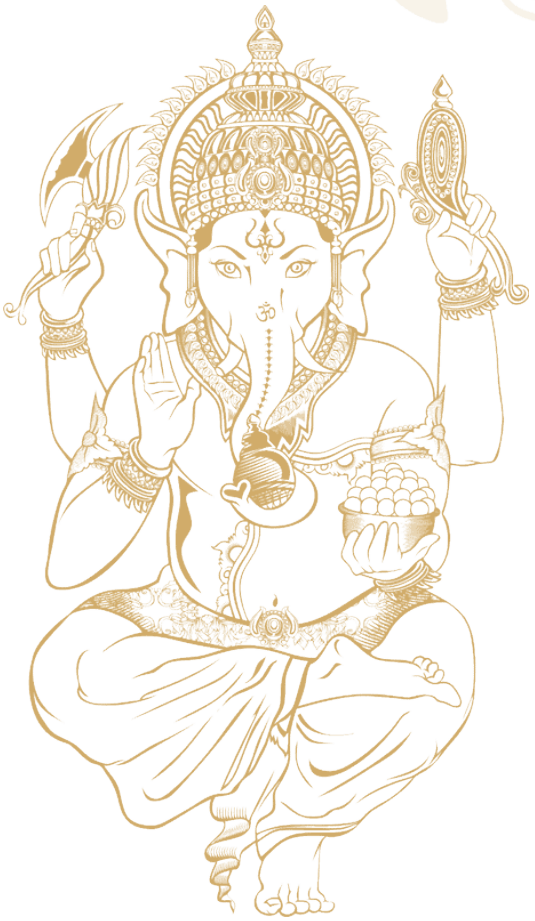

Mr.

26 Mar 2026

10:01 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121717701**

तिथि 26/03/2026 **समय** 10:01:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:31
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	21:54:26 घं
वेलान्तर	00:05:42 घं
सूर्योदय	06:18:37 घं
सूर्यास्त	18:35:33 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	चैत्र
पक्ष	शुक्ल
तिथि	8
नक्षत्र	आर्द्रा
योग	शोभन
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	ङ---
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	शुक्र
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

राहु 4वर्ष 11मा 14दि

राहु

26/03/2026
11/03/2031

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	26/03/2026
शुक्र	28/09/2027
सूर्य	21/08/2028
चन्द्र	20/02/2030
मंगल	11/03/2031

योगिनी

मंगला 0वर्ष 3मा 9दि

मंगला

26/03/2026
05/07/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	26/03/2026
सिद्धा	14/04/2026
संकटा	05/07/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			18:47:58	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	---	0:00			
सूर्य			11:18:18	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	चंद्र	मित्र राशि	1.65	पुत्र	पितृ	विपत
चंद्र			16:19:40	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि	0.91	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	24:20:25	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.27	आत्मा	भ्रातृ	सम्पत
बुध			15:35:14	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	सम राशि	1.25	मातृ	ज्ञाति	जन्म
गुरु			21:13:35	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.33	अमात्य	धन	सम्पत
शुक्र			00:15:02	मेष	अश्विनी	1	केतु	केतु	सम राशि	1.41	कलत्र	कलत्र	प्रत्यारि
शनि		अ	10:35:52	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	सूर्य	सम राशि	0.93	ज्ञाति	आयु	विपत
राहु			14:29:01	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु			14:29:01	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

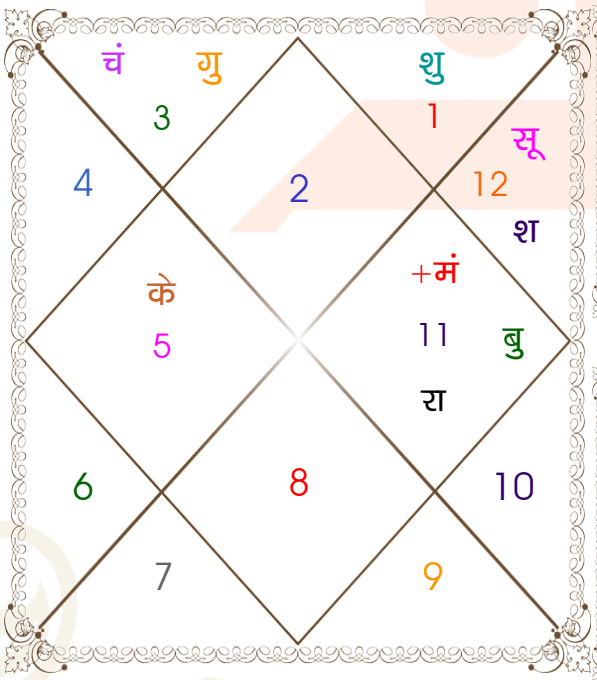

चन्द्र कुंडली

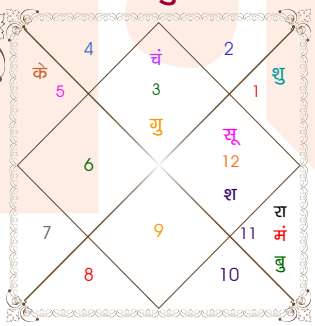

नवमांश कुंडली

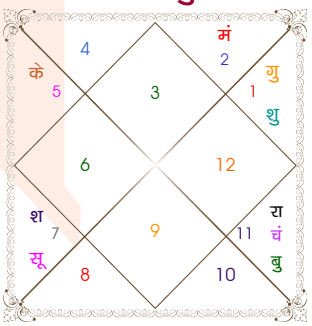

सर्वाष्टकवर्ग

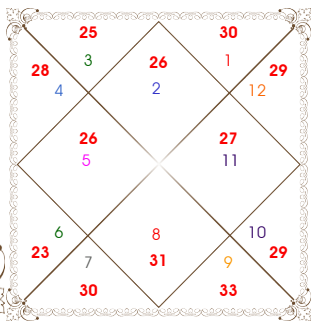

दशमांश कुंडली

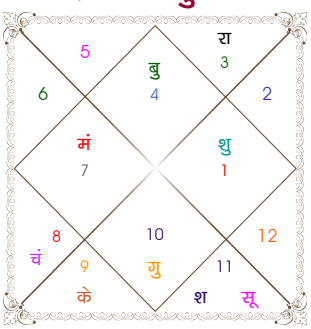

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

नक्षत्रफल

आप आर्द्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, योनि श्वान, गण मनुष्य तथा आद्य नाड़ी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "ग" से प्रारम्भ होगा अतः आपका जन्म नाम गणेश, गणपति, गजेन्द्र आदि होगा।

आप अपने जीवन काल में व्यस्तता या अन्य कारणों से भोजन समय पर लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप में शारीरिक लावण्यता भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रबलता रहेगी तथा कभी कभी छोटी छोटी बातों पर आप अनावश्यक क्रोध का प्रदर्शन करेंगे साथ ही समाज में अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगे। आप दया एवं करूणा के स्थान पर कठोरता का भी यदा कदा प्रदर्शन करेंगे। आप समीपस्थ सम्बन्धियों के प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्ति बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः।
प्रसूति काले च भवेत्किलार्द्रा दयाद्रचेता न भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक क्षुधा से आतुर, रूक्ष शरीर वाला, कुपित रहने वाला, कृतघ्न तथा दया से हीन होता है।

आपमें चंचलता का भाव प्रबलरूप से विद्यमान रहेगा तथा आप किसी भी कार्य को स्थिर मन से करने में असमर्थ रहेंगे। साथ ही आप एक स्थान पर स्थिर नहीं रहेंगे तथा नित्य परिवर्तन की इच्छा करेंगे। आपके पास धनार्जन भी मध्यम रूप से ही होगा परन्तु शारीरिक बल से आप सर्वदा पूर्ण रहेंगे एवं अपने बाहुबल से समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपकी शिक्षा भी मध्यम ही रहेगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

कृतघ्नः गर्वितोहीनः नरो पापरतः शठः।
आर्द्रानक्षत्र सम्भूतो धनधान्य विवर्जितः।।
मानसागरी

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कृतध्न, गौरव विहीन, पापी तथा धन एवं धान्य से हमेशा हीन होता है।

आपके मन में अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा साथ ही आपको अत्यन्त परिश्रम से महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी। आपका सामान्य जीवन संघर्षमय रहेगा एवं परिश्रम पूवर्क आप जीविकार्जन करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपमें प्रेम का भाव भी रहेगा अतः सामाजिक जनों से आप सौहार्द अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र का जातक कुटिल हृदय वाला, अभिमानी, कृतघ्न, हिंसक प्रवृति वाला तथा पाप कर्म करने वाला होता है।

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखाकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरूष समझें जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

आपका जन्म मिथुन राशि में हुआ है। अतः आप के नेत्र अल्प लालिमा से युक्त होकर श्याम वर्ण के होंगे तथा बाल घुंघराले होंगे। आपके शरीर के सभी अंग सुडौल एवं स्वस्थ होंगे। आपके शरीर की लम्बाई पूर्ण तथा नासिका थोड़ी उठी हुई होगी। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में आपकी रूचि रहेगी तथा स्वाध्याय के द्वारा ही आपको कई शास्त्रों के विषय में ज्ञान रहेगा। दूतकार्य या सन्देशों के आदान प्रदान के कार्य को आप करने वाले होंगे। आप अत्यन्त ही तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा सम्मुख खड़े व्यक्ति के मनोभावों को जानने में शीघ्र ही सफलता प्राप्त करेंगे। अन्य जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त उत्तम तथा वाणी मधुर होगी जिसे सुनकर श्रोता भी मुग्ध हो जाएंगे। आप हंसने तथा हंसाने में निपुण होंगे। संगीत तथा नृत्य के प्रति आपकी अभिरूचि रहेगी तथा इनके विषय में आप पर्याप्त ज्ञान रखेंगे।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुञ्चिद् मूर्धजः पटुमति हास्योद्गिग द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपके हाथ में मत्स्य चिन्ह अंकित हो सकता है। साथ ही शरीर की नसें भी बाहर दृष्टिगोचर होंगी तथा आपकी लम्बाई भी पर्याप्त मात्रा में रहेगी। लेखन प्रतिभा से आप नैसर्गिक रूप से सम्पन्न रहेंगे तथा साहित्य के प्रति भी आपका रूझान रहेगा। आप समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आनन्दपूर्वक उपभोग करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे। परन्तु आपका अधिक समय विषय वासनाओं के सुख में लिप्त होकर व्यतीत होगा। भाग्य हमेशा

आपका साथ देगा। परन्तु आप हमेशा वश में रहेंगे।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप दीर्घायु को प्राप्त होंगे तथा अपने सम्पूर्ण जीवन में हास्य प्रिय रहेंगे। भ्रमण करना या सुदूर क्षेत्रों की यात्रा करने में आपकी इच्छा होगी तथा घर में भी शान्ति तथा सन्तुष्टि का अनुभव करेंगे।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

समाज में आपके संबंध विस्तृत रहेंगे बहुत से लोगों से आपकी जान पहचान होगी तथा इनके मध्य आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे। विशेष रूप से स्त्रीवर्ग के आप आदर के पात्र समझे जाएगे। आप अपनी सुजनता तथा योग्यता से समाज में आदर तथा गौरव प्राप्त करेंगे।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप श्लिष्ट युक्त स्पष्ट वाक्यों का प्रयोग करने में सफल रहेंगे तथा अन्य जनों को उसे समझने में कोई परेशानी नहीं होगी। आप अपने स्वजनों, बन्धु वर्ग तथा सामाजिक लोगों की भलाई के कार्य करने के लिए भी हमेशा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रकृति पित तथा कफ मिश्रित होगी तथा आचरण उत्तम रहेगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपकी आखें हमेशा चंचलता से युक्त रहेंगी। नृत्य तथा संगीत के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित होंगे। आप अपने धनैश्वर्य, दयालुता तथा अच्छे व्यवहार से कीर्ति प्राप्त करेंगे। भाषण देने की कला में भी आप दक्ष होंगे। आप दृढ़निश्चयी प्रवृति के पुरूष होंगे एक बार जिस कार्य को अपने मस्तिष्क में सोच लेंगे उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगे चाहे मार्ग में कितनी ही विघ्न बाधाएं आएं। इसके अतिरिक्त आप न्यायवादी भी होंगे।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।

गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप देवताओं तथा ब्राह्मणों के प्रति श्रद्धावान होंगे तथा यथा समय इनकी पूजार्चना करते रहेंगे। कभी कभी आप के मन में अहंकार की भावना भी उत्पन्न होगी। दया तथा करूणा के भाव से आप पूर्ण रहेंगे तथा दीन दुःखियों की तन मन धन से सेवा तथा सहायता करने हेतु सर्वथा तत्पर रहेंगे। आप एक बलवान पुरूष भी होंगे। आप विविध कार्यों या कलाओं के जानने वाले होंगे। ज्ञानार्जन में भी आपकी पूर्ण रूचि रहेगी तथा स्वाध्याय के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने में सफलता मिलेगी। आपका शरीर सुन्दर, स्वस्थ तथा लावण्यता से युक्त रहेगा। इसके अतिरिक्त आप के द्वारा अन्य बहुत से लोग सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

धनैश्वर्य मान सम्मान तथा समस्त सुखों का आप आजीवन उपभोग करेंगे। निशाने बाजी में आप अत्यन्त कुशल होंगे। आपका शरीर गौरवर्ण का होगा तथा सम्पूर्ण नगरवासी आपका सम्मान एवं आदर करेंगे तथा आपके आज्ञाकारी होंगे। आपकी आँखें भी वृहताकार होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

श्वान योनि में जन्म लेने के कारण आप हमेशा कार्य करने में तत्पर रहेंगे बिना कार्य के आप कभी नहीं रहेंगे। साथ ही आपका मन भी उत्साह से परिपूर्ण रहेगा जो कार्य करने में आपको गतिशील रखेगा। बहादुरी का भाव आप में होगा तथा आप हिम्मत पूर्वक समस्याओं का सामना करेंगे। लेकिन अपने भाइयों एवं बन्धुवर्ग से आपका सदैव संघर्ष चलता रहेगा। माता पिता के आप अत्यन्त प्रिय होंगे तथा निःस्वार्थ भावना से आप इनकी सेवा आजीवन करते रहेंगे।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, चतुष्पाद करण सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट फल देने वाले हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों

स्वाती नक्षत्र, परिघयोग तथा चतुष्पाद करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूप से जागृत रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा न चल रहा हो मानसिक अशान्ति या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के व्रत रखने चाहिए साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, मिश्री, गुड़, घी, गेहूं इत्यादि पदार्थो का दान करना चाहिए। ऐसा करने से अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।